शतावधानी श्री आर. गणेश द्वारा रचित `कविविषादः' |

'कविविषादः' कविता में श्री आर. गणेश ने कविता न लिख पाने का दुख एवं कवि की मनःस्थिति का वर्णन किया है। **'वर्षाविभूतिः'** में ऋतुओं की रानी वर्षा के आगमन से प्रकृति में हुए परिवर्तन एवं धरती की खुशी एवं सभी जीवो के आनंदित होने का वर्णन किया है। यहाँ कृषक सखी का वर्णन अत्यंत सुंदर बन पड़ा है।

कविविषादः

1. यदाऽऽविष्टं----------कवनकीलोऽतिविकलः। (In Book)

जब(**यदा**) मेरे मन में विचार आते हैं, मैं उन्हें लिखना(लिपिबद्ध) करना चाहता हूं तब स्फूल्लिङ्ग के समान उभरते विचारों को व्यक्त करने के लिए मेरे पास बहुधा शब्द नहीं होते मानो शब्दार्थ रूपी ईंधन और विचार रूपी हवा स्फूल्लिङ्ग के रूप में दिखाई देते हैं तब मेरी बेचैनी अर्थात् विकलता और भी अधिक बढ़ जाती है अपनी बेचारगी के कारण।

2. कृशानुकविता----------दुर्भाविता। (In Book)

मेरी समस्त समस्त शक्तियां स्फुरित होने लगती हैं मानो विचार रूपी घी की आहुति दी जा रही हो। वाणी(शब्द और अर्थ) के व्यर्थ मंथन अर्थात् चिंतन-मनन में समय बीत जाता है, कविता लिख नहीं पाता मन में व्यर्थ के दुर्भाव(संकल्प-विकल्प) आने के कारण।

3. वाग्विचिकाः----------जयं श्रयन्ति। (In Book)

नीरवतापूर्ण कवि के मन रूपी सागर में विचार रूपी वाणी नित्य प्रति हिलोरें ले रही हैं(भाव उठ रहे हैं)। उन्हें पाने हेतु(आत्मसात करने का) संकल्प लेकर कभी मन दौड़ पड़ता है, परंतु हाय! दुर्भाग्यवश कभी भी विजयी नहीं होता।

4. उल्लोलाः----------समुग्रा मुधा। (In Book)

एक सुंदर बृहद भाव-तरंग कविह्रदय में उठता है, एक बड़ी लहर(विषय रूपी विचार) सामने आती है जिसकी प्रभा(कांति) से कविह्रदय उद्दीप्त हो उठता है, व्यग्रतापूर्वक धड़कते दिल से वह अपने भावों को सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान कर प्रबंध(काव्य) की रचना करना ही चाहता है कि हाय रे दुर्भाग्य! अथाह जलराशि में लहरों के थपेड़ों से पथभ्रष्ट जहाज के समान कवि भावों के बिखर जाने से निराश हो जाता है। कवि का सारा परिश्रम व्यर्थ चला जाता है।

5. व्युत्पत्तिजालमिह----------कर्कशकर्कतर्कान् । (In Book)

मौन समुद्र के गर्भ में व्युत्पत्ति(योग्यता) रूपी जाल फेंकनेवाले वाणी रूपी तरंगों से तरंगित कविरूपी धीवर काव्य रूपी मछलियों के लाभ के विषय में लोलुप बने हुए कर्कश केकड़े रूपी तर्कों को भी प्राप्त कर लेते हैं अर्थात् कुछ कवि सुंदर काव्य रचना की अपेक्षा तर्कादियुक्त कर्कश(कठोर) रचना कर पाते हैं ।

6. मौनाम्बुधौ----------कदापि । (In Book)

मानसिक विचार रूपी सूक्ति के अंदर मौनसागर में स्निग्ध प्रकाश में दिखने वाले सौम्य और गोल(कर्कशरहित) मूक रसानुभूति से प्राज्ञकवि कभी-कभी अनमोल मोती प्राप्त कर लेते हैं ।

7. नानामीन----------लुठन्ति स्फुटम् । (In Book)

शांत सागर में मीन, तिमि, तिमिंगल अर्थात् विभिन्न प्रकार की मछलियां समूह में विचरण करती रहती हैं और लहर(भाव) रूपी स्मृति के मध्य हिलोरे उठती रहती हैं । परंतु हाय! जैसे सुपारी, विद्रुम, लता इत्यादि के समान आभासित होनेवाले मुक्तामणि(वैदूर्यमणि) बहुधा गले में माला के समान शोभित होते हैं । ठीक वैसे ही कवि के मन में तरह-तरह के विचार आते रहते हैं परंतु कवि ग्राह्य को स्वीकार कर त्याज्य पदार्थ को यूं ही छोड़ देते हैं । क्योंकि कवि के लिए भावों को पकड़ना और उसे आत्मसात कर अभिव्यक्त(लिपिबद्ध) करना मुख्य होता है ।